बच्चे किसकी याद में बैठे है। याद करना है सिर्फ अल्फ को। भगवान बाप है ना। बाप है स्वर्ग स्थापने करने वाला। उसमें होता है ल न्न. का राज्य। बाप खुद इन दवारा सारी दुनियां को कहते है कि मुझे याद करो। तो पाप विनाश हो जावेंगे। पावन बन मेरे पास आवेंगे फिर सतयुग में जावेंगे। पावन है सतयुगी दुनियां। पतित से पावन कोई गंगा स्नान आद करने से नही बनेंगे। पतित पावन भगवान को ही कहा जाता है। बाप कहते है पावन बनो। विकार को छोडो। पवित्र बनो। देवतायें पवित्र है इसीलिये अपवित्र मनुष्य माथा टेकते है। पवित्रता तो अच्छी ही है नां। बाप आते है पावन बनाने। तो फिर अपवित्र नहीं होना चाहिये। ~~बोलते~~ बुलाते है पावन बनाओ तो क्यो नही बनते हो। इसमें खर्चा तो है नही। भक्ति मार्ग में तो ढेर खर्चा होता है। जहां माथा टेको वहां ही पैसे रखो। जन्म जन्मान्तर पैसे रखते धक्के खाते रहते है। स्वर्ग की बादशाही जो थी वो खत्म हो गई। नर्कवासी हो गये है। बाप कहते है विनाश सामने खडा है। पुरानी दुनियां में है ही पतित। इनकी है फिर पावन दुनियां। क्रियस कहते है हमको वाईसलैस बनाओ। अब कहता हूं विष्यस मत बनो। मुझे याद करो तो पापों का बोझा उतरे। देवतायें साधु सन्त को याद मत करो। वर्सा मिलता ही है बाप से। भाई को भाई से नही। अब आत्माओं का बाप है परमात्मा आत्मायें सब है भाई-2। सबको बाप से ही वर्सा मिलता है। तुम आये हो वर्सा लेकर स्वर्ग का मालिक बनने। बाप को याद करने से विकर्म विनाश होंगे। यह सृष्टी का चक्र पूरा होता है नां। अब अन्तिम जन्म है अब वापस जाना है। बाप को याद करते-2 घर चले जावेंगे। पवित्र तो रहना ही पडे। प्रजापिता ब्रह्मा कुमार कुमारियां है तो भाई बहन हो गये नां। विकार में जा नही सकते। यह युक्ति है। भाई बहन ही बाप से वर्सा लो। यह अन्तिम जन्म है। पुरानी दुनिया खत्म होनी है। साधु सन्यासियों को कोई प्राप्ती नही है तुमको प्राप्ती है। झगडा अत्याचार विकार पर होता है। वो कहते है भगवानोवाच्य काम महाशत्रु है। पवित्र बनने से 21 जन्म स्वर्ग का मालिक बनेंगे। तो तुम क्यों नही स्वर्ग के मालिक बनते। यह रावण राज्य है। कहते भी है फलाना स्वर्ग पधारा। तो यहां नर्क है नां। स्वर्ग सतयुग में है। नर्क है यहां। बाप ही आकर स्वर्ग का मालिक बनाते है नां। ऊंच ते ऊंच है बाबा। परमपिता परमात्मा। उनका नाम है शिव। शिव क्या आकर देंगे? स्वर्ग का वर्सा। तुम स्वर्ग का वर्सा पा रहे हो। स्वर्ग सतयुग को नर्क कलियुग को कहा जाता है। नर्क के विनाश लिये सामने लडाई खडी है। चक्र भी फिरना है। कलियुग के बाद सतयुग आना ही है। अभी है संगम युग। पुरूषोत्तम युग। मनुष्य से देवता बनते है नां। मनुष्य है विकारी तब तो देवताओं के आगे जाकर माथा टेकते है। तो पवित्रता अच्छी है नां। सतयुग में विकार होता नही है। वो है वाईसलैस वर्ल्ड। अब रावण राज्य मुर्दाबाद राम राज्य जिन्दाबाद होता है। तुम सालवेन्ट बन जाते हो। बेहद का बाप कितना अखुट खजाना देते है। अभी तुम पारस बुधी से पत्थर बुधी बन रहे हो। बाप कहते है पवित्र बनो तो स्वर्ग के मालिक बनोगे। तुम बेहद के बाप से वर्सा पाते हो। तुम चक्र लगाते रहते है। देवता, क्षत्री वैश्य शुद्र। सृष्टी चक्र फिरता ही रहता है। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी भगवान ही पढाते है। ऊंच ते ऊंच भगवान फिर सैकिंड नम्बर में ब्रह्मा विष्णु शंकर। फिर मनुष्य सृष्टी में पहले-2 इन ~~लक्ष्मी~~ देवताओं का राज्य था। नालेज कितनी सहज है। इस नालेज से 21 जन्मों लिये स्वर्ग के मालिक बनते हो। बादशाही जरूर स्थापना होनी है। आत्मा जो सतोप्रधान थी वो अब तमोप्रधान बनी है। खाद पडती है नां। सतयुग है गोल्डन ऐज फिर सिल्वर ऐज. ... यह बातें शास्त्रों में नही है। शास्त्र है भक्ति मार्ग के। उतरती कला होती है। बाप आकर सबकी चढती कला करते है। यह शरीर धन दौलत आद सब कुछ मिटी में मिल जाने का है। इसलिये बाप कहते है सिर्फ मुझे याद करो और पवित्र बनो तो पवित्र दुनियां के मालिक बन जाओगे। लौकिक बाप से हद का वर्सा पारलौकिक बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। छोटे बाप के होते हुये भी बडे बाप को याद करते है। बेहद का वर्सा देते है नां। यह है सहज से सहज पढाई। मौथा ही शीतल हो जाता है। वहां तो तुम देवताओं का ही राज्य होगा। और कोई का राज्य ही नही होगा। यह समझ कर समझाना है। क्यों कि कल्याण करना है। मनुष्य को पतित से पावन बनाने जैसा और कोई ऊंचा कल्याण है ही नही। गुड नाईट